iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology



INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 11 **Issue:** X **Month of publication:** October 2023

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2023.56087

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 11 Issue X Oct 2023- Available at www.ijraset.com

वैश्वीकरण भारत में धार्मिक हिंसा और मीडिया कवरेज

नेहा जावले[1], डॉ. एस. के. श्रीवास्तव[2]
[1]शोधार्थी, [2]एसोसिएट प्रोफेसर, जयपूर नॅशनल युनिव्हर्सिटी, जयपुर

सारांश: विश्व प्रसिद्ध डान्सर माइकल जैक्सन का जब निधन हो गया। एक नियमित मीडिया उपयोगकर्ता जिसने उसके बारे में कभी नहीं सुना था, वह एक विशिष्ट लेंस के माध्यम से माइकल जैक्सन के सभी विवरणों से परिचित हो गया। मीडिया आम तौर पर, मीडिया गेट कीपर उपलब्ध सूचनाओं की छानबीन करते हैं और इस बात का चुनाव करते हैं कि क्या समाचार योग्य है और क्या नहीं। इस प्रक्रिया में, कुछ कहानियों को खारिज कर दिया जाता है, कुछ को न्यूनतम कवरेज मिलता है और कुछ अन्य, जैसे माइकल जैक्सन अखबारों, समाचार वेबसाइटों के पहले पन्ने बनाते हैं या रेडियो या टेलीविजन समाचार कार्यक्रम में प्रमुख कहानी बन जाते हैं; कहानियां कभी-कभी दिनों और हफ्तों तक चल सकती हैं। इन कहानियों का मीडिया कवरेज दर्शकों की जागरूकता और इन मुद्दों तक पहुंच बढ़ाता है (प्राइस और टेक्सबरी, 1997)। 1920 की शुरुआत में, वाल्टर लिपमैन ने सुझाव दिया कि "मीडिया दूसरों की उपेक्षा करते हुए चयनित मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करके जनता की राय को नियंत्रित करेगा" (जैसा कि Scheufele & Tewksbury, 2007 में उद्धृत किया गया है)। कहानियों का चयन करने के अलावा, मीडिया अपने दर्शकों के लिए उन्हें समझने योग्य बनाने के लिए समाचारों को भी डिज़ाइन करता है।
समाचार कहानियों को आकार देने में, पत्रकार अर्थहीन और गैर-पहचानने योग्य घटनाओं को सुस्पष्ट घटनाओं में बदल देते हैं (तुचमैन, 1978)। वे इन घटनाओं के लिए एक संदर्भ प्रदान करते हैं; वे उन्हें फ्रेम करते हैं। शोधकर्ताओं ने मीडिया फ्रेमिंग शब्द का उपयोग घटनाओं और मुद्दों को व्यवस्थित करने और विशेष रूप से मीडिया पेशेवरों और उनके दर्शकों (रीज़, गैंडी, जूनियर, और ग्रांट, 2001) के तरीके का वर्णन करने के लिए किया है। एंटमैन (1993), फ्रेमिंग के बारे में विस्तार से बताने वाले पहले लोगों में से एक ने लिखा, "फ्रेम करने का मतलब एक कथित वास्तविकता के कुछ पहलू का चयन करना है और उन्हें एक संप्रेषण पाठ में अधिक प्रमुख बनाना है, इस तरह से एक विशेष समस्या परिभाषा को बढ़ावा देने के लिए, कारणात्मक व्याख्या, नैतिक मूल्यांकन और/या उपचार की सिफारिश" (पृ. 52)। उदाहरण के लिए, समाचार स्रोत और कहानी को कवर करने वाले पत्रकार के आधार पर, माइकल जैक्सन के चित्रण में बाल कौतुक से लेकर ड्रग एडिक्ट से लेकर किंवदंती तक और कभी-कभी, तीनों पर भिन्नता या संयोजन होता है।

I. परिचय

इस शोध पत्र में हम भारत में घटी हाल की घटनाओं की जांच करने के लिए फ्रेमिंग की अवधारणा का उपयोग करते हैं। जनवरी 2009 में भारतीय मीडिया, मैंगलोर, दक्षिण कन्नड़ में एम्नेसिया पब में महिलाओं के सामाजिककरण के खिलाफ हिंसा की छवियों और कहानियों से भर गया था। टेलीविजन और यू-ट्यूब पर दिखाई गई तस्वीरों में अन्य लोगों के साथ-साथ युवकों का एक समूह युवतियों पर हमला करते हुए दिखाया गया है। हिंदू-कट्टरपंथी संगठन, श्री राम सेना (राम की सेना) के प्रति निष्ठा के साथ, युवा गुंडों के एक बैंड द्वारा देर दोपहर के हमले में दावा किया गया कि वे पब में महिलाओं को देखे जाने के विरोध में थे। उन्होंने महसूस किया कि महिलाओं का बार-बार पब जाना और पुरुषों के साथ रहना बुरा है, यह भारतीय संस्कृति के खिलाफ है। टेलीविजन चैनलों और समाचार पत्रों ने हिंसा और इन कार्रवाइयों के सांस्कृतिक प्रभाव पर ध्यान केंद्रित किया। हालांकि दक्षिण कन्नड़ में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंदू कट्टरपंथियों की हिंसा कोई असामान्य घटना नहीं थी, इस विशेष घटना के मीडिया कवरेज ने इसे राष्ट्रीय ध्यान देने योग्य बना दिया। लाइव फुटेज को व्यापक कवरेज मिला। जबकि समाचार मीडिया ने मैंगलोर में घटनाओं को कवर किया, "पिंक चड्डी मूवमेंट" नामक एक विरोध आंदोलन ने पीड़ितों के लिए ऑनलाइन समर्थन प्राप्त किया और हिंसा के सांप्रदायिक झुकाव को बेतुका प्रस्तुत करने का एक साधन बन गया। वास्तव में पिंक चड्डी आंदोलन को देश भर में और यहां तक कि विदेशों में भी बहुत अधिक लाभ और समर्थन प्राप्त करने में सफलता मिली। श्री राम सेना के नेता प्रमोद मुथालिक को महिलाओं के गुलाबी अंडरवियर (चड्डी) भेजने का अभियान--- के बावजूद, इसने जागरूकता बढ़ाई, जबकि मीडिया का एक वर्ग और भारत के कुछ हिस्से आबादी ने आंदोलन का तिरस्कार किया, क्योंकि उन्हें लगा कि यह खराब स्वाद और भारतीय संस्कृति के खिलाफ है।

हालांकि, पब में हुए हमले को अल्पसंख्यकों के खिलाफ की गई हिंसा के पैटर्न के संदर्भ में देखा जाना चाहिए। इस विशेष घटना को जो बात उल्लेखनीय बनाती है वह यह है कि मीडिया कवरेज ने जनता का ध्यान आकर्षित किया और विरोध किया। यह इसलिए भी उल्लेखनीय है क्योंकि इसका परिणाम एक इंटरनेट आधारित सामाजिक विरोध के रूप में सामने आया जिसने भारी समर्थन प्राप्त किया।

©IJRASET: All Rights are Reserved

II. उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य हिंसा पर चर्चा करने में प्रयुक्त फ्रेम की जांच करना, वैश्विक संदर्भ में हिंसा की व्याख्या करना और गुलाबी चड्डी आंदोलन का वर्णन करना है। यह अध्ययन यह भी समझाने का प्रयास करता है कि कैसे विभिन्न कारकों ने फ्रेमिंग प्रक्रिया को प्रभावित किया और कैसे राजनेताओं और ऑनलाइन समर्थकों द्वारा तैनात फ्रेम ने समाचार कहानी, मैंगलोर की स्थिति और इंटरनेट विरोध आंदोलन को आकार देने का काम किया। यह शोध सैद्धांतिक दृष्टिकोण और संघर्ष की स्थिति में उनकी भूमिका के साथ शुरू होता है। अगले खंड में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा के संदर्भ और इतिहास को रेखांकित किया गया है। फिर हिंसा की कहानियों का वर्णन करने के लिए उपयोग किए गए फ्रेमों का विश्लेषण किया जाता है। अंत में गुलाबी चड्डी आंदोलन का वर्णन और विश्लेषण किया गया है।

III. एजेंडा सेटिंग और फ्रेमिंग

पिछले शोधकर्ताओं ने उस मुद्दे के दर्शकों की धारणाओं पर मीडिया कवरेज की सीमा के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए एजेंडा सेटिंग की अवधारणा का उपयोग किया है (मैककॉम्ब एंड शॉ, 1972)। एजेंडा सेटिंग का केंद्रीय विचार यह है कि कुछ मुद्दों को दूसरों पर प्राथमिकता देकर, मीडिया उन विषयों को आकार देता है जिनके बारे में दर्शक सोचते हैं और जिनके बारे में बात करते हैं (अब्राजानो और सिंह, 2009)। पिछले शोधकर्ताओं ने विशेष मुद्दों पर समाचार मीडिया के जोर और इन मुद्दों के सापेक्ष महत्व के दर्शकों की रैंकिंग के बीच एक कारण लिंक भी दिखाया है। (मैककॉम्ब एंड शॉ, 1972; अयंगर, पीटर्स और किंडर, 1982) मुद्दों को प्राथमिकता देने के अलावा, मीडिया किसी मुद्दे के दर्शकों के विचारों को आकार देने में भी प्रभावी होता है, जिसे "फ्रेमिंग" कहा जाता है। अनिवार्य रूप से, समाचार फ्रेमिंग वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाचार कहानियों का विषयगत या शैलीगत संगठन एक विशेष कोण पर जोर देता है, न कि अन्य कहानी पंक्तियों पर। फ्रेम मूल्यवान उपकरण हैं जो पत्रकारों को किसी मुद्दे को कम जटिल और उनके दर्शकों के लिए अधिक समझने योग्य बनाने की अनुमति देते हैं। इसके अलावा, रिपोर्टर के लिए मुद्दे के एक निश्चित पहलू पर ध्यान केंद्रित करना बहुत आसान होता है। वर्तमान फ्रेमिंग साहित्य अवधारणा को दो तरीकों से उपयोग करता है: फ्रेम बिल्डिंग और फ्रेम सेटिंग। फ्रेम बिल्डिंग ज्यादातर "इस सवाल से संबंधित है कि फ्रेम सामाजिक प्रवचन में कैसे स्थापित होते हैं और सामाजिक अभिजात वर्ग और पत्रकारों द्वारा गोद लेने के लिए अलग-अलग फ्रेम कैसे प्रतिस्पर्धा करते हैं" (ब्रायंट एंड ओलिवर, 2008, पृष्ठ 22)। फ्रेम सेटिंग आमतौर पर दर्शकों के सदस्यों पर फ्रेमिंग प्रभाव से संबंधित होती है। उदाहरण के लिए, समाचार फ्रेम दर्शकों की व्याख्या के साथ-साथ किसी कहानी के उनके स्मरण को भी प्रभावित करते हैं।

इस प्रकार घटनाओं का वर्णन करने के लिए उपयोग की जाने वाली फ्रेमिंग और मीडिया भाषा सार्वजनिक विचारों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, जब मीडिया ने सकारात्मक कार्रवाई को "सामाजिक न्याय के लिए एक संस्थागत प्रयास" के बजाय "विशेष रुचि" के मुद्दे के रूप में चित्रित किया, तो दर्शक इस मुद्दे को एक सामाजिक चिंता (गैमसन, 1983) के बजाय एक व्यक्तिवादी नैतिक समस्या के रूप में मानने लगे। जबकि व्यक्ति अन्य सूचनाओं और अपने स्वयं के अनुभवों पर आकर्षित हो सकते हैं, मीडिया फ्रेम एक मुद्दे के बारे में सोचने के कुछ तरीकों को प्रेरित करता है और विचार की अन्य संभावित रेखाओं को रोकता है (मूल्य, टेव्सबरी, और पॉवर्स 1997)। "फ्रेमिंग संचार प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है, वहीं मीडिया फ्रेमिंग एक यादृच्छिक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक शक्तिशाली विवेकपूर्ण रणनीति है।" (टकर, 1998, पृष्ठ 142)। "दरअसल, ख़बरों को जिस रूप में पेश किया जाता है, उसके कई कारण हैं। "एक कहानी का निर्माण 'विचारधारा और पूर्वाग्रह से प्रेरित' (एडेलमैन, 1993), पत्रकारिता के मानदंडों की बातचीत और सामाजिक समूहों (गैमसन और मोदिग्लिआनी, 1987) के प्रभाव से हो सकता है, या शायद जनता के प्रभाव और प्रयासों से हो सकता है। (एसरॉक, हार्ट, डी'सिल्वा, और वर्किंग, 2002)

समाचार मीडिया द्वारा फ्रेमिंग से परे, शोधकर्ताओं ने यह भी जांच की है कि इस तरह के संघर्षों के मीडिया कवरेज के आधार पर संघर्षों को कैसे बढ़ाया या फैलाया जाता है। जैसा कि ओमेनुघा और एडेम कहते हैं, "मीडिया निर्माण भी कर सकता है और विनाश भी कर सकता है। वे स्वस्थ बातचीत को बढ़ावा दे सकते हैं या भड़का सकते हैं। संघर्ष स्वाभाविक और सामान्य लग सकता है लेकिन हिंसा एक विकल्प है।" (पृष्ठ 53)। स्पष्ट रूप से, फ्रेमिंग की अवधारणा को एक अभिन्न कारक के रूप में माना जाने लगा है जो जातीय संघर्ष और जनमत से जुड़ा हुआ है। एक समाज में राय बनाने की प्रक्रिया का अध्ययन एक लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है और इसलिए, मास मीडिया, जातीय संघर्षों और सार्वजनिक मुद्दों का अध्ययन भी उतना ही महत्वपूर्ण है। "हमें विधायी प्रक्रिया, सामाजिक आंदोलनों, या जमीनी स्तर पर उपयोग किए जाने वाले विशेष फ्रेमों पर अधिक बारीकी से देखने और उनके पूर्ववर्ती के माध्यम से इसका पता लगाने की आवश्यकता है। इस तरह, हम मुद्दों के अध्ययन को अधिक महत्वपूर्ण और केंद्रीय बना सकते हैं" (कोसिक, 1993, पृ.120)।

IV. सामाजिक आंदोलन और आभासी समुदाय

सामाजिक आंदोलनों को एक साझा विशिष्ट सामूहिक पहचान वाले व्यक्तियों और संस्थानों की विविधता के बीच अनौपचारिक संबंधों के नेटवर्क के रूप में वर्णित किया जा सकता है। ये नेटवर्क उन मुद्दों पर संसाधन जुटाते हैं जो उनसे संबंधित हैं (डियानी 1992)।

व्यक्ति कंप्यूटर-मध्यस्थ आंदोलन में भाग ले सकते हैं क्योंकि वे इस मुद्दे पर विश्वास करते हैं भले ही वे आयोजकों से पिछले रिश्ते या स्थान से जुड़े न हों। ऐसे उदाहरणों में, संचार प्रौद्योगिकियां और अनौपचारिक नेटवर्क सूचना के प्रसारकों के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। ये आंदोलन "'नए सामाजिक स्थान' प्रदान करते हैं जहां ... समान विचारधारा वाले व्यक्ति एक जटिल और अक्सर विरोधाभासी दुनिया में अपने स्वयं के व्यक्तित्व की तलाश करते हैं" (जॉनस्टन, 1994, पृष्ठ 276)। इसके अतिरिक्त, नए सामाजिक आंदोलन "वर्ग और क्षेत्रीय सीमाओं के पार से नए तरीकों से अपना समर्थन प्राप्त करते हैं" और "जमीनी स्तर पर, अनौपचारिक और 'छिपे हुए' संगठन के रूपों पर एक उच्च मूल्य रखते हैं ..." (कीन एंड मायर, 1989, पृष्ठ 1).

V. अनुसंधान क्रियाविधि

इस अध्ययन में दो भाग शामिल हैं: फ्रेम विश्लेषण और इंटरनेट आंदोलन विश्लेषण। दोनों भाग गुणात्मक शोध परंपरा का उपयोग करते हैं। क्योंकि अध्ययन अपने प्रारंभिक चरण में है, हम यहां डेटा-एकत्रीकरण प्रक्रिया के केवल कुछ हिस्सों की रिपोर्ट करते हैं। भारत में जातीय हिंसा एक जटिल मुद्दा है और समय की कमी को देखते हुए, हमें इन घटनाओं का सरासरी तौर पर विश्लेषण करने के लिए मजबूर होना पड़ा है।
शोधकर्ताओं ने उन इंटरनेट समाचार खातों की समीक्षा की जो हिंदू, उदयवाणी, पीयूसीएल की रिपोर्ट और पिंक चड्डी अभियान सहित अन्य राष्ट्रीय और क्षेत्रीय प्रकाशनों में छपे थे। (इस पत्र के अगले खंड में इनमें से कई लेखों के उद्धरण शामिल हैं।) एनडीटीवी और दाईजी वर्ल्ड के इंटरनेट वीडियो स्रोतों (यू-ट्यूब) में हमलों की छवियों का विश्लेषण किया गया। गुलाबी चड्डी आंदोलन के बारे में सभी जानकारी का पता लगाने और उसका विवरण देने के लिए वेब स्रोतों का उपयोग किया गया था।

A. हिंसा का ऐतिहासिक लेखा जोखा

भारत में कर्नाटक सांप्रदायिक हिंसा के मामले में अन्य भारतीय राज्यों की तुलना में ऐतिहासिक रूप से एक शांतिपूर्ण राज्य रहा है। राज्य में विभाजन का प्रभाव सबसे कम महसूस किया गया; आजादी के बाद भी अस्सी के दशक के अंत तक कोई बड़ी सांप्रदायिक आग नहीं लगी थी। अस्सी के दशक के उत्तरार्ध में भी, जब दक्षिणी कर्नाटक में सांप्रदायिक हिंसा देखी गई, एक प्रमुख राज्य-स्तरीय अंग्रेजी समाचार पत्र (डेक्कन हेराल्ड) में पैगंबर मोहम्मद के बारे में एक भ्रामक शीर्षक के साथ एक छोटी कहानी के प्रकाशन के बाद, दक्षिण कन्नड़ जिला काफी हद तक उस प्रकार से मुक्त था। हालाँकि, जिले ने अस्सी के दशक के अंत में सांप्रदायिक ताकतों की वृद्धि देखी; जब तक देश भर में राम मंदिर आंदोलन ने गति पकड़नी शुरू की, तब तक यह जिला वास्तव में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सबसे अनुकूल जिलों में से एक बन गया। 1991 में, लोकसभा (जनता की विधानसभा) के आम चुनावों में, भाजपा दक्षिण कन्नड़ निर्वाचन क्षेत्र से अपनी पार्टी के एक सदस्य को निर्वाचित करने में सफल रही। इस सीट से बीजेपी पहले कभी नहीं जीती थी. वास्तव में भाजपा के विकास के अग्रदूत, जिसे आरएसएस, वीएचपी और बजरंग दल जैसे संगठनों और श्री राम सेना जैसे संगठनों का समर्थन प्राप्त है, जैसा कि पीयूसीएल (2009, पृ. 10) कहता है, "जिले में मौजूदा सांप्रदायिक तनाव 1970 के दशक के उत्तरार्ध में देखे जा सकते हैं, जब भूमि सुधारों ने विभिन्न समुदायों और जातियों के लिए एक-दूसरे के साथ काम करने और प्रतिस्पर्धा करने के लिए नए स्थान बनाए। " दक्षिणपंथी हिंदू कट्टरपंथी समूहों ने कुछ जातियों जैसे मोघवीरा और बिलाव (पीयूसीएल, 2009) के बीच सामान्य आर्थिक अभाव का उपयोग किया और उन्हें अपने पाले में खींच लिया। मुसलमानों (व्यवसाय में) और ईसाइयों जैसे बड़े पैमाने पर समृद्ध अल्पसंख्यक समुदायों ने कट्टरपंथी समूहों द्वारा फैलाए गए तनाव में इजाफा किया। विहिप द्वारा शुरू किया गया राम मंदिर आंदोलन, और बाद में अस्सी के दशक के अंत में भाजपा द्वारा अपनाया गया, हिंदू दक्षिणपंथी संगठनों में अधिक धर्मान्तरित लोगों को भी लाया।
2006 में कर्नाटक में भाजपा की सरकार में शामिल होने के बाद अल्पसंख्यकों के खिलाफ शारीरिक हिंसा और नैतिक सतर्कता के इन कृत्यों में शामिल संगठनों ने और अधिक आधार प्राप्त किया और अधिक निर्लज्ज हो गए। इस अवधि के दौरान, विशेष रूप से दक्षिण कन्नड़ जिले में, इस तरह के कृत्यों की घटनाएं बढ़ीं खतरनाक ढंग से। हालांकि, कानून और व्यवस्था बलों ने घटनाओं की अनदेखी की; कुछ मामलों में, उन पर इन संगठनों के कृत्यों में सहभागी होने का आरोप भी लगाया गया है। मई 2008 में अपने बल पर भाजपा सरकार के आगमन को "कर्नाटक में हिंदू अधिकार की राजनीति में एक महत्वपूर्ण बेंचमार्क" कहा जाता है (पीयूसीएल, 2009, पृष्ठ 11)। नई सरकार के शपथ लेने के महीनों के भीतर, ईसाई चर्चों पर सुनियोजित हमले शुरू हो गए, सरकार ने न केवल इसके खिलाफ कार्रवाई की, बल्कि इसके कुछ मंत्री, जिनमें गृह मंत्री भी शामिल थे, हमले के लिए ईसाइयों की गलती निकालने की कोशिश कर रहे थे।

B. पब हमला

मैंगलोर के मध्य में स्थित एम्रेशिया पब पर हमला शाम 4 बजे के आसपास हुआ, वास्तव में वह समय नहीं था जब शराब पीने वाले लोग पब में जाने का विकल्प चुनते थे, बल्कि छात्रों के लिए सुविधाजनक समय था। अखबारों में प्रकाशित एक चश्मदीद गवाह के अनुसार सिर पर भगवा पट्टी और स्कार्फ (दक्षिणपंथी कट्टरपंथी समूहों का विशिष्ट पहनावा) पहने 40 लोगों का एक बैंड, पहले एक समूह में इकट्ठा हुआ और पब में घुसने और “जय” के नारे लगाने से पहले चुपचाप प्रार्थना की। श्री राम, भारत माता की जय, बजरंग दल की जय, श्री राम सेना की जय।

पीयूसीएल (2009) की रिपोर्ट में कहा गया है, "'उन्होंने अंदर जाने के लिए कहा ताकि वे सभी को जोड़ से बाहर निकाल सकें,' एक पीड़ित ने कहा। जैसे ही प्रवेश द्वार पर बाउंसरों ने उनसे बातचीत की, पब के कर्मचारियों ने जल्दी से दरवाजे बंद कर दिए और बाउंसरों को बाहर बंद कर दिया। शोर सुनकर, रसोई के एक जिज्ञासु कर्मचारी ने पीछे का दरवाजा खोला, यह देखने के लिए कि क्या हो रहा है। भीड़ ने इस मौके का फायदा उठाया और रसोई घर में घुस गई। 'एक बार अंदर, वे सीधे महिला मेहमानों के लिए गए। उन्होंने उन्हें डांस फ्लोर के बीच में घेर लिया और फिर उन्हें बेरहमी से पीटना शुरू कर दिया, 'उसने कहा। शुरूआती पिटाई के बाद कुछ हमलावरों ने उनमें से कुछ को पहचानना शुरू किया और उनके साथ छेड़खानी की।

एक अन्य पीड़िता ने अपना चेहरा ढंकते हुए टाइम्स नाउ चैनल से बात की। इस आघात को याद करते हुए कि कोई भी सांत्वना मिटा नहीं सकती, उसने दावा किया कि श्री राम सेना के कार्यकर्ताओं ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया और उन्हें "वेश्या" कहा। “हम पर हमला किया गया, बुरी तरह पीटा गया, हमारे बाल खींचे गए, हमें लात मारी गई, फर्श पर लिटा दिया गया। हमारी कुछ पैंट नीचे खींची गई, स्कर्ट नीचे खींची गई। हम पर हमला करने से ज्यादा सताया गया। कैमरे के सामने छेड़खानी और वेश्या कहलाना ऐसी चीज है जिससे कोई भी लड़की नहीं गुजरना चाहती।” “हम जीवन के लिए डरे हुए हैं ….. हमें फेंका गया, मारा गया। आपने जो नहीं देखा वह उस दिन हमने देखा था- हमारे साथ छेड़छाड़ का फुटेज, ”एक भयभीत पीड़िता ने याद किया। उन्होंने कहा कि, "शनिवार को जो हुआ वह दर्दनाक था, लेकिन हमें फिर से सुरक्षित महसूस करने की जरूरत है।"

हमले के बारे में ध्यान देने योग्य तथ्यों में से एक यह था कि हमले की अग्रिम सूचना प्राप्त करने वाले मीडिया के साथ इसे अच्छी तरह से व्यवस्थित किया गया था। वास्तव में हमला तब शुरू हुआ जब टीवी कैमरे हमले को पूरी तरह से कवर करने के लिए अच्छी तरह से तैनात थे। यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि भूलने की बीमारी पब एक पॉश, भीड़भाड़ और ऊपर बाजार इलाके में स्थित है। दिनदहाड़े हुए इस हमले को कई राहगीरों ने देख लिया। बड़ी संख्या में देखने वालों में केवल एक व्यक्ति पवन कुमार शेट्टी थे, जो उन लड़कियों के बचाव में गए, जिनके साथ मारपीट की जा रही थी।

घटनाओं को याद करते हुए, पवन कुमार बताते हैं: “मैं खड़ा होकर देखना सहन नहीं कर सकता था। मैं सिर्फ लड़कियों से उनका ध्यान हटाने के लिए हमलावर भीड़ में भाग गया। वीडियो क्लिपिंग में दिखाया गया है कि पूरी भीड़ पवन कुमार पर अपना गुस्सा उतारती है, जिससे महिलाएं बच जाती हैं। उनके अनुसार, वहाँ सौ से अधिक दर्शक थे, "लेकिन उनमें से किसी ने भी हमले को रोकने के लिए कुछ नहीं किया।" अगर हमलावरों के खिलाफ लोग एकजुट हो जाते तो वे उन्हें आसानी से खदेड़ सकते थे। इसके बजाय, “हर कोई कार्रवाई की एक झलक पाने के लिए एक दूसरे के ऊपर गिर रहा था। यह एक क्रिकेट मैच की तरह था।" (पीयूसीएल, 2009)।

VI. विश्लेषण

हालांकि कहानी की रिपोर्टिंग में कई फ्रेम सामने आए, यहां हम दो का परिचय देते हैं जो प्रवचन पर हावी थे: (ए) पब संस्कृति बनाम प्रामाणिक संस्कृति और (बी) हिंसात्मक । प्रत्येक फ्रेम ने मैंगलोर स्थिति की एक विशेष व्याख्या की अनुमति दी। हम इनमें से प्रत्येक को नीचे संबोधित करते हैं:

VII. पब संस्कृति बनाम प्रामाणिक संस्कृति

मीडिया में रिपोर्ट की गई पब संस्कृति एक विशिष्ट भारतीय घटना है। एक वेब ब्लॉग जिसने सवाल उठाया, "पब संस्कृति क्या है?" इस सवाल का जवाब इस प्रकार दिया: "यदि हम शब्द का विश्लेषण करते हैं [यह] वास्तव में सार्वजनिक स्थानों पर पुरुषों के साथ शराब पीने और सामाजिककरण के लिए खड़ा है। बार, या पब, सालों से थे और पुरुष हमेशा से रहे हैं। जब तक पुरुष जा रहे थे तब तक इसे "भारतीय संस्कृति" विरोधी होने के बारे में कोई विरोध नहीं था (भारत सारांश, 2009)।

पब हमलों की रिपोर्ट में हमलों की निंदा शामिल थी लेकिन अक्सर ऐसे पब समाजीकरण के नैतिक परिसर के बारे में चिंताएं उठाई जाती थीं। उदाहरण के लिए, कर्नाटक के मुख्यमंत्री को यह कहते हुए उद्धृत किया गया, "'पब संस्कृति' गलत है और ऐसी संस्कृतियों की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।" (पब संस्कृति की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए, 2009, पैरा 1)। वह अपने विचारों में अकेले नहीं थे। "पब भारतीय संस्कृति के लिए खराब हैं" जैसी टिप्पणियां। वे "भारतीय परंपरा का उल्लंघन करते हैं" समाचारों में भी दिखाई दिए। दिलचस्प बात यह है कि टिप्पणियों ने हमलों की निंदा की, लेकिन उस आधार की नहीं जिस पर वे आधारित थे: भारतीय महिलाओं के जीवन को विनियमित करना। जैसा कि बिदवई (2009, पैरा 2) कहता है, महिला पब जाने वालों के खिलाफ हिंसा "एक चरमपंथी, पुरुष वर्चस्ववादी, शुद्धतावादी आचार संहिता का आरोपण है, जिसके साथ 'प्रामाणिक संस्कृति' के नाम पर समाज को बदनाम करना है।" समालोचना में प्रच्छन्न पब संस्कृति का एक "पुरुष शक्ति और विशेषाधिकार" के रूप में भारतीय संस्कृति का निर्माण है और "एक बड़े पितृसत्तात्मक ढांचे का प्रतिबिंब है जो महिलाओं को अधीनस्थ करने के लिए कार्य करता है" (मारिन और रूसो, 1999, पृष्ठ 20)।

हालाँकि, अधीनता महिलाओं की रक्षा के विषय में छिपी हुई है; इस मामले में पश्चिमी संस्कृति से महिलाओं (पुरुषों की नहीं) की रक्षा करना। उदाहरण के लिए, श्री राम सेना के प्रमुख, मुथालिक ने कहा कि पब संस्कृति भारतीय संस्कृति नहीं थी और [हमें] "... माताओं और बेटियों को पश्चिमी विचारधारा के हमले से सुरक्षित रखना चाहिए (iwebie.com 1st feb.)।पश्चिमी विचारधारा, वैश्वीकरण का एक उपोत्पाद, अक्सर ईसाई अल्पसंख्यकों के हाशिए पर जाने और दुर्व्यवहार के कारण के रूप में उद्धृत किया जाता है। (इस विषय को इस खंड में आगे विस्तृत किया गया है।)

मुथालिक ने यह भी कहा... "हिंदू सांस्कृतिक विरासत को डिस्को, पॉप और हिप-हॉप संस्कृति (iwebie.com 1st feb) के उन्मादी ज्वार से दूर रखा जाना चाहिए। अल्पसंख्यकों को पश्चिमी संस्कृति से सुरक्षित रखने के अजीबोगरीब बहाने पर हमले एक महत्वपूर्ण मुद्दा उठाते हैं: हमलावरों का रोष दक्षिण कन्नड़ महिलाओं की पिटाई और कहीं और रिपोर्ट किए गए अपमान में प्रकट होता है (उदाहरण के लिए, अन्य धर्मों के पुरुषों की कंपनी में होने के लिए महिलाओं को अपनी पैंट में पेशाब करना)। ऐसा रोष अन्य प्रश्न उठाता है और अन्य उदाहरणों को ध्यान में लाता है। हाशिए पर रहने वाले अल्पसंख्यकों पर द्वेषपूर्ण ध्यान का केंद्र कोई नई बात नहीं है। उदाहरण के लिए, हिटलर ने यहूदियों, जिप्सियों - जर्मन अल्पसंख्यकों - के बारे में तमाम तरह के दावे करने के बाद उन्हें खत्म करने का फैसला किया।

VIII. धार्मिक उन्माद

यहां, इस मुद्दे पर चर्चा करने के लिए विशिष्ट भाषा की स्थापना की प्रक्रिया में चौधरी ने स्वयं फ्रेम को प्रभावित किया। इस प्रकार, उसने आंशिक रूप से आकार दिया कि मीडिया द्वारा इस मुद्दे पर कैसे चर्चा की गई। जल्द ही हिंसात्मक कार्यकर्ताओं और मीडिया की पसंद का रूपक बन गया। उदाहरण के लिए, मानवाधिकार कार्यकर्ता, बुर्का सिंह ने कहा, "हमारा समाज विरोधाभासों का शिकार है, जिसमें हमारी सरकार हिंसात्मक पर पाकिस्तान को बिना यह बताए कि भारत के भीतर तेजी से फैल रही इसी तरह की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने के लिए क्या किया जा रहा है।

यद्यपि फ्रेम हिंसात्मक हमलों के पीछे विचार की कठोरता को प्रभावी ढंग से पकड़ता है, और महिलाओं के कठोर उपचार को मुख्य बनाता है, यह फ्रेम अपने दर्शकों में भय भी पैदा करता है। ऐसे में समस्या-केंद्रित फ्रेम कोई उम्मीद नहीं पेश करता है। यह समाधान के लिए पर्याप्त जगह नहीं देता है।

ब्लॉगर ने एम्नेसिया पब घटना के कवरेज के लिए मुख्यधारा के मीडिया की आलोचना की, विशेष रूप से श्री राम सेना की नकारात्मक भूमिका और हिंदुत्व लोगों के संबंध को उजागर करने के लिए। हालाँकि, ब्लॉगर की प्रतिक्रिया ने देश के कई अन्य लोगों की भावनाओं को नहीं समझा। दरअसल, कार्यकर्ताओं, धर्मनिरपेक्ष व्यक्तियों और अन्य लोगों ने कुछ हिंदू कट्टरपंथियों के कार्यों का विरोध किया।

मैंगलोर हमलों के जवाब में, महिलाओं के एक समूह ने एक जमीनी इंटरनेट अभियान चलाया, जिसे पिंक चड्डी (पिंक पैंटी) आंदोलन के रूप में जाना जाने लगा। यह आंदोलन इतना सफल था कि लेखन के समय इसके 21,000 सदस्य बन गए थे। चड्डी अंडरगारमेंट्स के लिए एक लिंग-तटस्थ शब्द है (कई भारतीय भाषाओं में)। जैसा कि उनकी वेबसाइट पर बताया गया है:

पिंक चड्डी (पिंक पैंटी) राम सेना और उसके प्रमुख प्रमोद मुथालिक को पिंक चड्डी भेजने के मिशन के साथ "पब-गोइंग, लूज़ एंड फॉरवर्ड वूमेन का एक संघ" है। राम सेना को गुलाबी चड्डी क्यों भेजें? याद रखें, राम सेना और उसके गुंडों ने मैंगलोर में युवतियों को जाहिरा तौर पर पब जाने और वेलेंटाइन डे न मनाने की सख्त चेतावनी के साथ पीटा था। और, प्रफुल्लित रूप से, राम सेना कहती है, "अच्छे परिवारों से कोई भी इस तरह के सस्ते कदमों का सहारा नहीं लेगा" - मतलब वे "अच्छे परिवारों" से आते हैं जो महिलाओं को पब जाने या "अभद्र" कपड़े पहनने के लिए पीटते हैं! पिंक चड्डी अभियान एक संदेश है कि भारतीय महिलाओं को सार्वजनिक रूप से पीटना भारतीय संस्कृति के खिलाफ" भी है।

नए सामाजिक आंदोलन अक्सर लक्ष्य-उन्मुख व्यक्तियों द्वारा शुरू किए जाते हैं। पिंक चड्डी की शुरुआत निशा सुज़ैन ने की थी, जिन्होंने महसूस किया कि कुछ करना होगा। अभियान बयानबाजी की जांच, डफी (1997) नोट "घटनाओं की व्याख्या कभी भी तटस्थ नहीं हो सकती है; वे हमेशा एक निश्चित परिप्रेक्ष्य से घटनाओं को प्रस्तुत करने के लिए संगठित होते हैं और वे दूसरों को उस परिप्रेक्ष्य को साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं" (पृष्ठ 129)। पिंक चड्डी सांस्कृतिक पुलिसिंग की कहानी को लटकाने के लिए सिर्फ एक हुक नहीं था, बल्कि एक शक्तिशाली छवि और कथा थी, जो उन महिलाओं से जुड़ी थी, जिन पर हमला किया गया था और महिलाएं (और पुरुष) जो घटनाओं के दौरान बहुत परेशान थीं। उन्होंने एक "हम बनाम वे" मानसिकता स्थापित की (हार्ट, एसरॉक, डी'सिल्वा और वर्किंग, 2001 देखें)। उन्होंने कथा समापन प्रदान किया। "कथात्मक समापन न केवल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक कहानी के भीतर विषयगत और चारित्रिक विकास को "बाहर" करता है, बल्कि इसलिए भी कि यह कहानी को उसके नैतिक अर्थ के साथ पूरी तरह से प्रभावित करता है। एक कहानी जो संक्षिप्त या अस्पष्ट तरीके से समाप्त होती है, लेखा परीक्षकों को भ्रमित, निराश, या यहां तक कि उदासीन छोड़ सकती है, क्योंकि उनके सामने एक संघर्ष या दुविधा होने के कारण, यह उन शर्तों का खुलासा करने में विफल रहता है जिन पर उस संघर्ष या दुविधा को नैतिक रूप से संतोषजनक तरीके से हल किया जा सकता है। तरीका। और यह उन कथाओं के मामले में और भी सच है जिनके पात्रों को स्पष्ट रूप से "अच्छे" या "बुरे" के रूप में दर्शाया गया है। (ग्रिफिन, 2000, पृष्ठ 69)। सबसे बड़े अर्थ में, एक सामाजिक आंदोलन कहानी के रूप में खुद को दुनिया के सामने प्रकट करता है, एक नैतिक कम्पास और एक उद्देश्यपूर्ण गंतव्य

(ग्रिफिन, 2000) के साथ पूरा होता है। विरोध के बावजूद पिंक चड्डी आंदोलन कायम रहा, लोगों में उत्साह पैदा किया और अपने मकसद की ओर ध्यान आकर्षित करने में सफल रहा। उन्होंने सफलतापूर्वक एक आभासी समुदाय (विरनोचे और मार्क्स, 1997) बनाया जहां महिलाएं (और पुरुष) इस मुद्दे के बारे में व्यापक चिंताओं को साझा करते हैं लेकिन आमने-सामने बातचीत के अवसरों की कमी से मिल सकते हैं और एक आम लक्ष्य के लिए काम कर सकते हैं।

वास्तव में आभासी समुदाय का विकास स्पष्ट विरोधियों की स्थापना के साथ-साथ हुआ था, और एक स्पष्ट अन्याय, सफल कहानी संरचना के दो तत्व (गैमसन, 1990; मैककार्थी, 1994)। हंट, बेनफोर्ड और स्नो (1994) के अनुसार, सामाजिक आंदोलनों को तीन आवश्यक निर्माण कार्यों का सामना करना पड़ता है: नैदानिक, भविष्यसूचक और प्रेरक। निदान में सुधार करने और जिम्मेदार पक्षों के लिए एक समस्या को इंगित करना शामिल है। यह "दोषी एजेंटों" को "खलनायक, अपराधी, या विरोधी की भूमिका पहचान" के साथ निर्दिष्ट करता है (पृष्ठ 191)। निशा की वेब साइट ने समस्या का निदान किया, प्रमोद मुथालिक को अपराधी के रूप में पहचाना, और आंदोलन समर्थकों की राय और बाद की समाचारों के उन्मुखीकरण ने इस निदान को पुष्ट किया, जिससे उनके दर्शकों के बीच इन विचारों की व्यापक स्वीकृति में मदद मिली। प्रैग्नेंसी में समस्या को हल करने की योजना शामिल है। यहाँ कार्रवाई स्पष्ट थी: गुलाबी पैंटी भेजें। लोगों को शामिल करने में प्रेरणा केंद्र - लोगों को कारण में क्यों शामिल होना चाहिए इसका तर्क। मीडिया कवरेज में समाचार और मानव हित कोणों ने व्यापक रूप से प्रतिध्वनित और "क्रॉसकटिंग आइडेंटिटीज़" (मैककार्थी, 1994, पृष्ठ 134) द्वारा समर्थन प्राप्त किया। अंत में, आंदोलन के आयोजकों को सूचना प्रसारित करने का एक प्रभावी माध्यम मिला: इंटरनेट।

IX. विचार विमर्श और निष्कर्ष

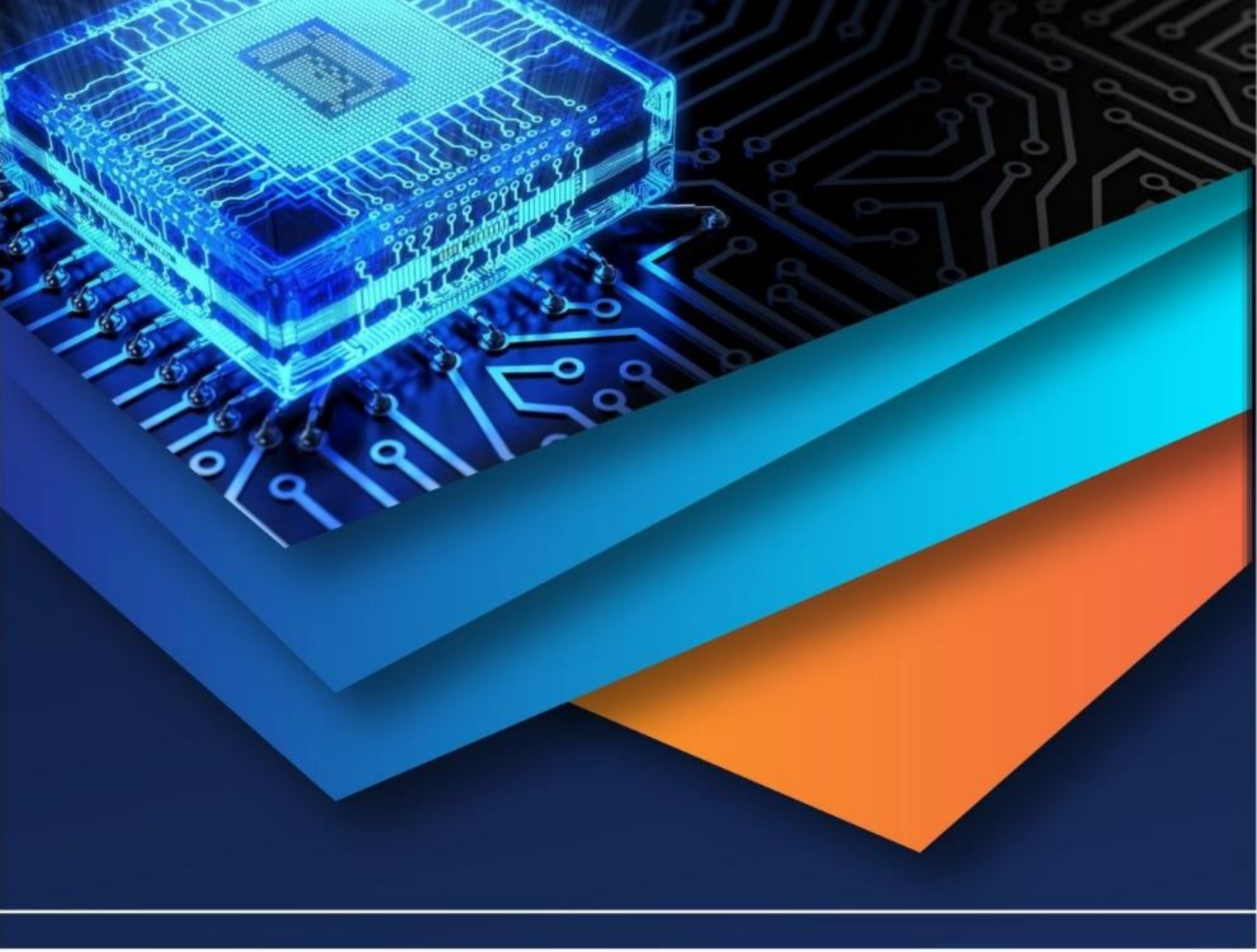
हमलों और पिंक चड्डी आंदोलन से उत्पन्न प्रतिस्पर्धी मीडिया फ्रेम किसी भी तरह से खत्म नहीं हुए हैं। हालांकि जिस विशिष्ट मुद्दे के लिए पिंक चड्डी अभियान शुरू किया गया था, वह पृष्ठभूमि में चला गया है, इस तरह के अभियान की आवश्यकता बनने का व्यापक कारण बना हुआ है। अभियान का नतीजा: कर्नाटक में वैलेंटाइन डे काफी शांतिपूर्ण तरीके से मनाया गया, लेकिन इसने किसी भी तरह से पब हमलों और चर्च हमलों के अपराधियों को कम नहीं किया। दक्षिण कन्नड़ जिला, विशेष रूप से, नैतिक सतर्कता के साथ-साथ अल्पसंख्यक उत्पीड़न की घटनाओं का गवाह बना हुआ है। नवीनतम मामला अगस्त के तीसरे सप्ताह में रिपोर्ट किया गया है: बंटवाल कॉलेज में एक मुस्लिम लड़की को कॉलेज में सिर पर दुपट्टा नहीं पहनने का आदेश दिया गया था। सिर पर पहनने के अलावा, हिंदू दक्षिणपंथी छात्रों को कॉलेज के अधिकारियों का समर्थन मिला। जिस तरह से इस घटना ने राष्ट्रीय समाचार पत्रों और टीवी चैनलों को रास्ता दिया, वह इस बात का संकेत है कि छोटी-छोटी रोजमर्रा की घटनाओं और छोटी-छोटी समस्याओं को भी बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाएगा और एक बड़े आख्यान का हिस्सा बन जाएगा, जिससे कट्टरपंथी हिंदू समूहों द्वारा प्रभावी ढंग से हेरफेर किए गए व्यक्तियों से अल्पसंख्यकों पर और अधिक हमले होंगे। या घृणित नागरिकों का विरोध।

पिंक चड्डी आंदोलन से पता चलता है कि एक संगठित अभियान को जन्म देने, संगठित करने और बनाए रखने के लिए केवल वेब के माध्यम से एक दूसरे से जुड़े सदस्यों के साथ नए आभासी सामाजिक आंदोलनों के लिए यह संभव है। इंटरनेट ने एक "अनुकूलन योग्य समुदाय" (जोन्स, 1995) में एक केंद्रित "मुद्दा समूह" (एब्रामसन, आर्टेरटन, और ऑरेन, 1988) के रूप में अंतरिक्ष में असंबद्ध व्यक्तियों को एक साथ लाने में मदद की।

REFERENCES

[1] Abrajano, M. & Singh, S. (2009). Examining the link between issue attitudes and news source: The case of Latinos and immigration reform. Political Behavior, 31(1), 1-30.
[2] Appadurai, A. (2006). Fear of Small Numbers: An Essay on the Geography of Anger. Duke University Press.
[3] Bidwai (2009). India: Cultural aggression in the name of Hindutva. Nav Hind Times, 12 Feb 2009.
[4] Bryant, J. & Olive, M. B (2008). Media effects: Advances in theory and research.
[5] Conte, C. (1997). Grassroots communities: Building the local information network. In What's at stake 2: Defining the public interest in the digital age. Washington, D.C.: Benton Foundation. Available online at: http://www.benton.org/Library/WAS2/communities.html
[6] Diani, M. (1992). The concept of social movement. Sociological Review, Vol. 40 pp.1 - 25.
[7] Diani, M. (2000). Simmel to Rokkan and beyond: Towards a network theory of (new) social movements. European Journal of Social Theory, Vol. 3 pp.387 - 406.
[8] Duffy, M. (1997). High stakes: A fantasy theme analysis of the selling of riverboat gambling in Iowa. Southern Communication Journal, 62(2), 117-132.
[9] Edelman, M.J. (1993). Contestable categories and public opinion. Political Communication, 10, 232-247.
[10] Entman, R.M. (1993). Framing: Toward clarification of a fractured paradigm. Journal of Communication, 43, 51–58.
[11] Esrock, S.L., Hart, J.L., D'Silva, M.U. and Werking, K.J. (2002), "The saga of the crown pilot: framing, reframing and reconsideration", Public Relations.
[12] Gamson, W.A. (1983). Talking Politics. Cambridge, UK: Cambridge University Press.
[13] Gamson, W., & Modigliani, A. (1987). The changing culture of affirmative action, Research in Political Sociology, 3, 137–177.
[14] Gamson, W. (1990). The strategy of social protest (2nd Ed.). Belmont, CA: Wadsworth.
[15] Gans, H. (1979). Deciding what's news. New York: Patheon.

[16] Griffin, C. J. G. (2000). The "Washingtonian Revival": Narrative and the moral transformation of temperance reform in antebellum America. Southern Communication Journal, 66(1), 67-78. India Summary (2009). Retrieved on August 5, 2009 from (http://www.indiasummary.com/2009/01/31/anti-pub-culture-in-india
[17] Hart, J., Esrock, S., D'Silva, M. & Werking, K. (2001). David and Goliath Revisited: Grassroots Consumer Campaign Battles a Corporate Giant. American Communication Journal, 4(3).
[18] Iyengar, S., Peters, M.D., & Kinder, D.R. (1982). Experimental demonstrations of the 'Not-so- Minimal' consequences of television news programs. American Political Science Review, 76, 848–858.
[19] Johnston, H. (1994) . New social movements and old regional nationalisms. In E. Laraña, H. Johnston, & J. R. Gusfield (Eds.), New social movements: From ideology to identity (pp. 267- 286). Philadelphia: Temple University Press.
[20] Keane, J., & Mier, P. (1989). Editors' preface. In A. Melucci, Nomads of the present: Social movements and individual needs in contemporary society (pp. 1-9). Philadelphia: Temple University Press.
[21] Kosicki, G. M. (1993). Problems and opportunities in agenda-setting research. Journal of Communication 43, 100–127.
[22] Lankesh, G (2006). The media's role in communalising Karnataka. Communalism Combat.
[23] Lankesh, G (2008). A State under siege. Tehelka Magazine. November 01, 2008.
[24] Marin, A. & Russo, N. F..(1999). Feminist perspectives on male violence against women: Critiquing O'Neil and Harway's model. In J. O'Neil and M. Harway (eds.) What causes men's violence against women (pp. 18–35) Thousand Oaks: Sage.
[25] McCombs, E., & Shaw, D. L. (1972). The agenda-setting function of mass media. Public Opinion Quarterly, 36,, 176–187.
[26] Meeks, B. N. (1997, February). Better democracy through technology. Communications of the ACM, 40(2), 75-78.
[27] Omenugha, K. A., & Adum, A. N. (2008). Nigeria's spiral of violence: Can the media build a culture of peace? Media Development, 1, 50-54
[28] Price, V., & Tewksbury, D. (1997). News values and public opinion: A theoretical account of media priming and framing. Progress in the Communication Sciences, 13, 173–212.
[29] Price, V., Tewksbury, D., & Powers E. (1997). Switching trains of thought: The impact of news frames on readers' cognitive responses. Communication Research, 24, 481–506.
[30] Pub culture should not be permitted (2009). Retrieved on August 6, 2009, from http://news.oneindia.in/2009/01/29/pub-culture-should-not-be-permitted-bsy.html
[31] PUCL (2009). Cultural policing in Dakshina Kannada. Report on cultural vigilantism against women and minorities in Karnataka by People's Union for Civil Liberties, Karnataka Chapter.
[32] S. Reese, O. Gandy, & A. Grant (Eds.) (2001). Framing public life: Perspectives on media and our understanding of the social world. Mahwah, NJ: Erlbaum
[33] Scheufele, D. A., & Tewksbury, D. (2007). Framing, agenda-setting, and priming: The evolution of three media effects models. Journal of Communication, 57(1), 9-20.
[34] Tucker, L. R. (1998). The framing of Calvin Klein: a frame analysis of media discourse about the August 1995 Calvin Klein Jeans advertising campaign. Critical Studies in Mass Communication, 15, 141–157.



10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)